H-99

न्यू मीडिया में हिंदी की वर्तमान स्थिति

– शैलेश शुक्ला

उद्देश्य : इस आलेख में हम **न्यू मीडिया** जिसे आम भाषा में **सोशल मीडिया** या **वेब मीडिया** भी कहा जाता है,के माध्यम से वैश्विक फलक पर हिंदी के प्रचार–प्रसार और हिंदी की वर्तमान स्थिति को समझने का प्रयास करेंगे। हिंदी का वैश्विक विस्तार फिर चाहे वह बोलचाल की भाषा के रूप में हो या अध्ययन एवं अध्यापन के रूप में, हिंदी फिल्मों का प्रचार–प्रसार हो या रेडियो पर हिंदी कार्यक्रमों के प्रसारण हो या फिर इंटरनेट के माध्यम से हिंदी सीखना, हिंदी लिखना एवं पढ़ना हो, हिंदी में विदेशी भाषाओं की सामग्री का अनुवाद हो या फिर विदेशी फिल्मों का हिंदी में डब करके रिलीज करना हो – इन सभी पहलुओं को हम **न्यू मीडिया** के मंच के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे।

मनुष्य और भाषा : करीब 2,300 वर्ष पहले महान यूनानी दार्शनिक अरस्तु ने कहा था – "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।" मनुष्य अकेले अपना जीवनयापन नहीं कर सकता और इसलिए उसे एक समाज की आवश्यकता होती है, जिसके माध्यम से वह अपनी तमाम आवश्यकताओं की संतुष्टि कर पाता है। अपनी तमाम आवश्यकताओं को बताने के लिए उसे स्वयं को अभिव्यक्त करना पड़ता है।

प्रारंभ में मनुष्य स्वयं को हाव–भाव से व्यक्त करता रहा फिर धीरे–धीरे उसने पत्तों एवं चट्टानों पर आकृतियाँ बनाना शुरू किया और इस तरह धीरे–धीरे हज़ारों वर्षों की सतत् प्रक्रिया से विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न काल–खण्डों में विभिन्न भाषाओं की उत्पत्ति हुई जो कि मनुष्य की अभिव्यक्ति का माध्यम बनीं।

भाषा एवं भाषा का माध्यम : भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम होती है और मीडिया भाषा के व्यवहार का माध्यम बनता है। हज़ारों वर्षों तक भाषा केवल वाचिक परंपरा के माध्यम से व्यवहृत होती रही। उसके बाद ताम्रपत्रों, शिलाओं और पत्तों पर भाषा को लिखित रूप दिया जाने लगा। नौवीं शताब्दी में चीन में लकड़ी के ब्लॉक्स के माध्यम से मुद्रण का प्रमाण मिलता है। 868 ईसवी में चीन में तांग वंश (618–9–9) के शासन के दौरान 'स्वर्ण सूत्र' नाम से एक पुस्तक मुद्रित की गई जो करीब एक हज़ार वर्ष एक गुफा में पड़े रहने के बाद सन 1900 में मिली और फिलहाल ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दन में है। लकड़ी के ब्लॉक्स से छपाई का यह तरीका आठवीं–नौवीं शताब्दी में जापान और कोरिया में भी प्रयोग किया गया। वहीं फिर पंद्रहवीं सदी के मध्य में पहली मशीनी मुद्रण प्रणाली जोन्स गुटेनबर्ग द्वारा विकसित की गई।

हिंदी और मुद्रण : मुद्रण मशीन आ जाने से भाषाओं का व्यवहार विस्तृत रूप से होने लगा। हिंदी के व्यवहार को मुद्रण माध्यम का लाभ थोड़ी देर से मिलना शुरू हुआ। 30 मई 1826 को देश का पहला हिंदी समाचार पत्र (साप्ताहिक) पंडित जुगल किशोर शुक्ला ने कलकत्ता (अब कोलकाता) में शुरू किया और इसके साथ ही हिंदी भाषा के विस्तार ने गति पकड़नी शुरू की। आज हिंदी में छपने वाले पत्र–पत्रिकाओं की संख्या हज़ारों में और उनके पाठक करोड़ों में हैं।

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में रेडियो और उत्तरार्द्ध में टीवी प्रसारण की शुरुआत होने से हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के व्यवहार और विस्तार को बढ़ावा मिला।

बीसवीं सदी के आखिरी दशक में इंटरनेट ने देश में प्रवेश किया और बीसवीं सदी के आखिरी वर्षों

में हिंदी ने इंटरनेट की दुनिया में प्रवेश किया और इसके साथ शुरू हुआ, हिंदी भूमंडलीकरण। इंटरनेट पर हिंदी भाषा के प्रयोग से विश्व भर में हिंदी की पहुँच क्षण भर में होने लगी। देश के किसी भी कोने से ब्लॉग, फेसबुक या व्हाट्सऐप पर हिंदी में लिखी–बोली गई बात पल भर में विश्व व्यापी हो जाती है। विश्व के किसी भी देश के किसी भी कोने से उस बात तक इंटरनेट के माध्यम से पहुंचा जा सकता है।

इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक के उत्तरार्द्ध में हम सूचना विस्फोट के युग में जी रहे हैं। सूचना विस्फोट के साथ–साथ ये युग सूचना–आक्रमण, सूचना–आघात और सूचना–प्रतिघात का भी है। अब मात्र सूचना के हथियार से बड़ी–से–बड़ी लड़ाई और बड़े–से–बड़ा युद्ध लड़ा जा सकता है।

आज के युग में 'सूचना' नामक इस हथियार से तेजी से लक्ष्य भेदने के लिए तीव्र मिसाइल का काम किया है, इंटरनेट आधारित न्यू मीडिया ने। इस न्यू मीडिया ने जहाँ एक ओर सूचना को तीव्रतम गति से पहुँचाना संभव किया वहीं यह भी सुनिश्चित किया कि सूचना के इस हथियार का प्रयोग अधिकाधिक लोग कर सकें। अब सूचना कुछ गिने–चुने सम्पन्न लोगों के इशारे पर चलने वाला प्यादा नहीं रहा। सूचना का लोकतंत्रीकरण हो रहा है और सूचना अब रूप से विचरण कर रही है। सूचना की इस उन्मुक्तता को संभव बनाया है 'न्यू मीडिया' ने।

न्यू मीडिया क्या है

न्यू मीडिया क्या है? इस सवाल का जवाब जानने के लिए न्यू मीडिया को ही खंगाला गया। हिंदी में इस सवाल के जवाब में न्यू मीडिया के गूगल गुरु की खोज में 26,20,000 (छब्बीस लाख बीस हज़ार) परिणाम प्राप्त हुए। ध्यान देने वाली बात यह है कि यही प्रश्न जब गूगल खोज में अंग्रेजी में (What is New Media) पूछा गया तो 1,61,00,00,000 (एक अरब इकसठ करोड़) परिणाम प्राप्त हुए। यहाँ यह ध्यान देने वाली बात है कि हिंदी के मुकाबले अंग्रेजी में प्राप्त होने वाले परिणाम 614 गुना अधिक हैं कारण बिलकुल स्पष्ट है कि अभी इस न्यू मीडिया जगत में अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है।

न्यू मीडिया का एक बहुत ही महत्वपूर्ण मंच और अब तक के मानव इतिहास का सबसे बड़ा, सबसे ज़्यादा लोगों द्वारा तैयार किया गया, सबसे अधिक भाषाओं में उपलब्ध और सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला इनसाइक्लोपीडिया–'विकीपीडिया' हिंदी खोज में पहले नंबर पर और अंग्रेजी में दूसरे नम्बर पर रहा। अंग्रेजी में (What is New Media) खोजने पर परिणामों में पहले नंबर पर www.newmedia.org का लिंक www.newmedia.org/what-is-new-media.html रहा। वो और बात है कि न्यू मीडिया का परिभाषा के लिए इस वेबसाइट को भी विकिपीडिया की शरण में जाना पड़ता है।

विकिपीडिया (अंग्रेजी) पर न्यू मीडिया (New Media) के बारे में दी गई जानकारी के अनुसार, न्यू मीडिया सामान्यतः वह सामग्री है जो इंटरनेट के माध्यम से जब चाहो तब उपलब्ध हो जाती है, जिस तक किसी भी डिजिटल उपकरण के माध्यम से पहुंचा जा सकता है, और इसमें आमतौर पर प्रयोक्ता की ओर से अंतर्क्रियात्मक फीडबैक और सृजनात्मक भागीदारी होती है। न्यू मीडिया के आम उदाहरणों में ऑनलाइन समाचार पत्र, ब्लॉग, विकी, वीडियो गेम, कंप्यूटर मल्टीमीडिया, सीडी रोम, डीवीडी और सोशल मीडिया जैसी वेब साइट्स शामिल हैं। न्यू मीडिया की एक खास विशेषता संवाद है। न्यू मीडिया संपर्कों और वार्तालाप के माध्यम से सामग्री प्रसारित करता है। यह विश्व भर के लोगों को विभिन्न विषयों पर विचारों को साझा करने, उन पर टिपण्णी करने और चर्चा करने में सक्षम बनाता है। पुरानी तकनीको से बिलकुल अलग, न्यू मीडिया अंतर्क्रियात्मक समुदाय पर आधारित है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि न्यू मीडिया वह संवादात्मक डिजिटल मीडिया है, जिसे इंटरनेट का प्रयोग करते हुए कंप्यूटर और मोबाइल

जैसे डिजिटल उपकरणों के माध्यम से प्रयोग में लाया जाता है। इसके प्रयोक्ता को सामग्री का सृजन करने, सुधार करने, चयन करने, प्रतिक्रिया करने की सुविधा होती है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण उपयोगिता यह है कि इसकी सुविधाओं का लाभ कहीं भी उठाया जा सकता है, चाहे आप अपने घर में हों या फिर घर के बाहर, चाहे आप अपने किसी दोस्त या रिश्तेदार के पास गए हों या फिर कहीं पर्यटन पर, चाहे आप बस में हों या ट्रेन में – हर जगह न्यू मीडिया तक पहुँच कर इसके माध्यम से सूचनाओं का आदान–प्रदान किया जा सकता है, ज़रूरत है तो बस केवल इंटरनेट युक्त एक उपकरण की। फिर चाहे वो कंप्यूटर हो या लैपटॉप, इंटरनेट सुविधा वाला मोबाइल हो या फिर टेबलेट।

हिंदी की वर्तमान स्थिति

एक समय था, जब कहा जाता था कि ब्रिटिश साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता और अब एक समय ऐसा आ गया है कि जब हम गर्व से कह सकते हैं कि हिंदी का सूर्य कभी अस्त नहीं होता है। ऐसा कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं। हिंदी ने अपनी उपयोगिता और स्वतः स्फूर्त ऊर्जा से वह स्थान प्राप्त किया है जिसे करने के लिए ब्रिटिश साम्राज्य ने ताक़त, क्रूरता, हिंसा, दमन आदि का प्रयोग किया गया।

विश्व में भारतीय लोग और हिंदी : विश्व के 150 से अधिक देशों में भारतीय मूल के लोग निवास करते हैं। उनमे से एक बड़ी संख्या ऐसी है जो मातृभाषा या दूसरी भाषा के रूप में हिंदी जानते हैं। इन विभिन्न भाषा–भाषी प्रवासी भारतीयों में से अधिकांश आपस में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करते हैं। इतना ही नहीं, इनमे से बहुत से ऐसे लोग हैं जो हिंदी में साहित्यिक–सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करते हैं या ऐसी गतिविधियों में शामिल होते हैं।

विश्व की भाषाएँ और हिंदी : विश्व में करीब 6,000 भाषाएँ हैं। बहुत सी ऐसी भाषाएँ भी हैं जिन्हें बोलने वालों की संख्या बहुत कम है। वहीं कुछ भाषाएँ ऐसी भी हैं जो विश्व के कई देशों में बोली और सीखी जाती हैं। विश्व की दस सबसे प्रभावशाली भाषाओं में से हिंदी एक है। अमेरिका के चिकित्सकों के बीच अंग्रेजी और स्पेनिश के बाद तीसरी सबसे लोकप्रिय भाषा हिंदी है।

विश्व की भाषाओं में हिंदी का स्थान : दुनिया के डेढ़ सौ से अधिक देशों में दो करोड़ से अधिक भारतीय लोग निवास करते हैं। अधिकांश प्रवासी भारतीय आर्थिक रूप से समृद्ध हैं। सन् 1999 में मशीन ट्रांसलेशन शिखर बैठक में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो. होजुमि तनाका ने जो भाषाई आंकड़े प्रस्तुत किए थे, उनके अनुसार विश्व में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम और हिंदी का द्वितीय तथा अंग्रेजी का तृतीय है।

विश्व में हिंदी लेखन–पठन : हिंदी साहित्य विश्व के सौ से अधिक देशों में लिखा–पढ़ा जा रहा है। सूचना तकनीक के विकास के कारण एक देश में हो रहे लेखन को विभिन्न देशों में रहने वाले पाठक आसानी से पढ़ पा रहे हैं। हिंदी का जितना प्रचार–प्रसार पिछले दो दशकों में हुआ है, उतना उससे पहले के कई सौ वर्षों में नहीं हो पाया था।

हिंदी और उसका मीडिया : प्रारंभ में हिंदी भाषा और साहित्य वाचिक परंपरा से प्रचारित–प्रसारित होते रहे। आदिकाल एवं मध्यकाल के हिंदी साहित्य के बहुत कम लिखित प्रमाण मिलते हैं और जो मिलते भी हैं उनके प्रामाणिक रूप के बारे में कुछ भी निश्चित रूप से कहना मुश्किल रहता है। ख़ैर, इसके बाद देश में अठारहवीं शताब्दी के अंतिम दशक में मुद्रण सुविधा शुरू हुई और उन्नीसवीं सदी के तीसरे दशक में जुगल किशोर शुक्ल के 'उदन्त मार्तण्ड' के साथ मुद्रण माध्यम ने हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रचार–प्रसार को गति दी।

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में रेडियो और बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में टीवी ने हिंदी भाषा और साहित्य को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका

निभाई। बीसवीं सदी के अंतिम दशक और इक्कीसवी सदी में इंटरनेट के माध्यम से हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार–प्रसार तीव्र गति से हो रहा है।

हिंदी की प्रमुख वेबसाइट्स : अनुभूति, अनुरोध, अभिव्यक्ति, हिंदी नेस्ट, गीत पहल, भारत दर्शन, शब्दांकन, सृजनगाथा, स्वर्गविभा, पूर्वाभास, साहित्यकुंज, समयांतर, हिंदी चेतना, गर्भनाल, हिंदी समय, कविता कोश, गद्य कोश आदि जैसी सैकड़ों ऐसी वेबसाइट्स हैं जिन पर हिंदी साहित्य विभिन्न विधाओं में प्रचुर मात्रा में लिखा जा रहा है और साथ ही इन वेबसाइट्स पर प्रकाशित साहित्य को विश्व भर में पढ़ा जा रहा है।

हिंदी और बाज़ार : विकसित देशों में भी हिंदी को लेकर ललक बढ़ रही है। कारण यह है कि किसी भी बहुराष्ट्रीय कम्पनी या देश को अपना उत्पाद बेचने के लिए आम आदमी तक पहुँचना होगा और इसके लिए जनभाषा ही सबसे सशक्त माध्यम है। यही कारक हिंदी के प्रचार–प्रसार में सहायक सिद्ध हो रहा है।

हिंदी का अध्ययन–अध्यापन : विदेशों में 40 से अधिक देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जा रही हैं। भारत से बाहर जिन देशों में हिंदी का बोलने, लिखने–पढने तथा अध्ययन और अध्यापक की दृष्टि से प्रयोग होता है, उन्हें हम इन वर्गों में बांट सकते हैं :

1. जहां भारतीय मूल के लोग अधिक संख्या में रहते हैं, जैसे–पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका और मालदीव आदि।

2. भारतीय संस्कृति से प्रभावित दक्षिण पूर्वी एशियाई देश, जैसे– इंडोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड, चीन, मंगोलिया, कोरिया तथा जापान आदि।

3. जहां हिंदी को विश्व की आधुनिक भाषा के रूप में पढाया जाता है, जैसे अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और यूरोप के देश।

4. अरब और अन्य इस्लामी देश, जैसे– संयुक्त अरब अर्मारात (दुबई) अफ़गानिस्तान, कतर, मिस्र, उज़्बेकिस्तान, कज़ाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान आदि।

जिन विदेशी विश्वविद्यालयों मे हिंदी अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्थाएं हैं, उनकी आर्थिक व्यवस्था भले ही उन देशों की सरकारों की ओर से होती हो, पर अनेकानेक विदेशी हिंदी विद्वान हिंदी और भारतीय संस्कृति के अनुराग में इतने रम गए हैं कि उन्होंने अपनी जीवनचर्या को ही हिंदी के प्रति समर्पित कर लिया है। उनमें इतना सच्चा और गहरा हिंदी अनुराग है कि ये हिंदी का काम ही नहीं करते बल्कि जब–जब हिंदी इस देश में बढ़ती है, उनमें प्रसन्नता होती है, जब–जब हिंदी पीछे धकेली जाती है, उन्हें पीड़ा होती है। हिंदी के इन अनुरागी विदेशी विद्वानों के प्रति यह देश कृतज्ञ है।

हाल ही में अनवर अशरफ, संवाददाता, बी.बी.सी. हिंदी ने जर्मनी में विस्तृत स्तर पर एक अध्ययन किया। जिसके अनुसार जर्मनी में हिंदी को बड़े स्तर पर पसंद किया जा रहा है। जर्मनी के लोगों को हिंदी इतनी भा गई है कि वहां की लगभग 14 यूनिवर्सिटियों में हिंदी सिखाई ज़ा रही है।

दशकों पहले से रूस में हिंदी फिल्में, हिंदी गाने और हिंदी साहित्य लोकप्रिय रहे हैं। लम्बे समय से भारत में रूस का व रूस में हिंदी साहित्य पढ़ा, लिखा और अनुवाद किया जाता रहा है। रूस में आज भी हिंदी फिल्मों का जलवा कायम है।

बी.बी.सी. की हिंदी सेवा : ये हिंदी की उपयोगिता कहें या ज़रूरत कि आज़ादी के बहुत पहले ही 11 मई 1940 को बी.बी.सी. ने अपनी हिंदी प्रसारण सेवा शुरू कर दी थी। समय बदला और अन्य संचार माध्यमों की तरह बी.बी.सी. ने वेबसाइट्स की अहमियत को भी पहचाना और वर्ष 2001 में बी.बी.सी. हिंदी डॉट कॉम की शुरुआत हुई। इसका उद्देश्य भारत और दुनिया भर के हिंदीभाषी पाठकों तक समाचार और विश्लेषण पहुंचाना था। यह एक 24X7 वेबसाइट्स है और पत्रकारों की एक टीम सप्ताह के सातों दिन,

24 घंटे दुनिया भर के पाठकों के लिए सामग्री उपलब्ध कराती है। बी.बी.सी. हिंदी डॉट कॉम के पहले पन्ने पर सभी प्रमुख समाचारों को जगह दी जाती है। और इसके अलावा विश्लेषण, जनरुचि की ख़बरों और फीचरों का प्रकाशन किया जाता है। इस वेबसाइट्स के अन्य इंडेक्स हैं– भारत, पाकिस्तान, चीन, खेल, मनोरंजन, विज्ञान, कारोबार, मल्टीमीडिया, ब्लॉग/फोरम, बी.बी.सी. विशेष और लर्निंग इंगलिश।

सूचना क्रांति और हिंदी : सूचना क्रांति के इस युग में विभिन्न भाषा–भाषियों के बीच में अपने तकनीकी उत्पाद, जैसे मोबाइल, कंप्यूटर आदि बेचने के लिए हिंदी बाज़ार की एक आवश्यकता बन गई है। लगभग सभी बड़ी कंपनियां अपने फोन को अंग्रेजी के साथ हिंदी भाषा में भी उपलब्ध करा ही हैं। चाइनीज कंपनियां तो पहले से ही अपने हर छोटे–बड़े फोन को हिंदी में भी उपलब्ध करा रही हैं। हमारे गांवों में जिस किसी के पास भी मल्टीमीडिया फोन होता है, वो उसे हिंदी में इस्तेमाल करना ज़्यादा सरल समझता है।

स्मार्टफोन और हिंदी : स्मार्टफोन के लिए कई तरह के ऐप्लीकेशंस भी डेवलप किए गए है। इनमें से भले ही अधिकतर अंग्रेजी में हों, लेकिन भारत में लोग अभी भी हिंदी भाषा के ऐप्लीकेशन का प्रयोग करते है। इसलिए ऐप में अलग से हिंदी भाषा को भी दिया जाता है। फेसबुक और गूगल जैसी बड़ी वेबसाइट्स भी इंडिया और दुनियाभर के यूजर्स को हिंदी में जानकारी उपलब्ध करा रही हैं।

गूगल और हिंदी : ख़बर है कि जल्द ही गूगल ई–मेल जैसी अपनी महत्वपूर्ण सर्विस को पूर्णतया हिंदी में भी उपलब्ध कराने वाली है। उदाहरण के लिए, अभी तक आपका ई–मेल पता अंग्रेजी भाषा में होता था, लेकिन कुछ ही दिनों बाद आप अपना ई–मेल आई.डी. हिंदी में भी बना पाएंगे।

हिंदी और सर्च इंजन : आज हिंदी के 15 से भी अधिक सर्च इंजन हैं जो किसी भी वेबसाइट का चंद मिनटों में हिंदी अनुवाद करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं। याहू, गूगल, और फेसबुक भी हिंदी में उपलब्ध हैं। अब कंप्यूटर से निकल कर हिंदी मोबाइल में न केवल पहुँच चुकी है बल्कि भरी संख्या में लोग इसका उपयोग भी कर रहे हैं। मोबाइल तक हिंदी की पहुँच ने देश में देवनागरी लिपि के समक्ष खड़ी चुनौती को काफी हद तक मिटा दिया है।

हिंदी और हॉलीवुड : यह हिंदी की ताक़त, हिंदी का महत्व और हिंदी की स्वीकृति ही है कि चाहे वो हॉलीवुड फिल्मों के निर्माता हों या फिर दक्षिण भारतीय भाषाई फिल्मों के– सब अपनी फिल्मों को हिंदी में अवश्य रिलीज करवाना चाहते हैं। हॉलीवुड की फिल्मों में कई बार यह प्रयास होता है कि उन्हें भारत में अमेरिका से पहले रिलीज करने के निर्णय लिए जाते हैं। हॉलीवुड प्रोडक्शन हाउस 'डिज़नी' ने 'जंगल बुक' को भारत में अमेरिका से एक सप्ताह पहले रिलीज किया। यह पहली बार नहीं हुआ था कि विदेशी स्टूडियो ने भारत में रिलीज को अमेरिका से पहले किया, इससे पहले भी वार्नर स्टूडियो की 'होबिट 3' एंड 'जर्नी 2' भारत में अमेरिका से पहले रिलीज़ की गई।

हिंदी और विदेशी लेखक : चीन के प्रसिद्ध लेखक अलाई की दो पुस्तकें 'रेड पोप्पिज' और 'होलो माउंटेन' हिंदी भाषा में पिछले वर्ष दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में विमोचित की गईं। चीनी भाषा में मूल रूप से लिखी गई इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद भारतीय पत्रकार आनंद स्वरूप वर्मा ने किया है।

यह हिंदी के आकर्षण, हिंदी की उपयोगिता और हिंदी के बाज़ार का ही प्रभाव है कि सैंकड़ों विदेशी लेखकों की रचनाओं का हिंदी अनुवाद निरंतर किया जा रहा है। गद्यकोश ओर्ग (org) के पृष्ठ 'विदेशी भाषाओं से अनूदित' पर 40 से अधिक लेखकों की रचनाओं के अनुवाद की जानकारी मिलती है।

कविताकोश ओर्ग (org) के पृष्ठ 'विदेशी

भाषाओं से अनूदित' पर साठ से अधिक देशों– अंगोला, इंग्लैंड, अफगानिस्तान, अमेरिका, अरब, अर्जेंटीना, आर्मेनिया, ऑस्ट्रिया, इटली, इराक, एस्तोनिया, क्यूबा, कज़ाखिस्तान, कांगो, ग्वॉटेमाला, गुआना, चिली, चीन, जर्मनी, जर्मेका, जापान, तिब्बत, तुर्की, दक्षिण अफ्रीका, नाइजीरिया, निकारागुआ, नेपाल, नॉर्वे, पुर्तगाल, पेरू, पोलिश, फ़िनलैंड, फ़िलिस्तीन, फ्रांस, बांग्लादेश, बेलारूस, बेल्ज़ियम, ब्राजील, मक्सिको, मोज़ाम्बिक, यमन, इज़राईल, रूमानिया, रूस, रेड इंडिया, लीबिया, लेबनान, वियतनाम, साल्वाडोर, सिंगापुर, सीरिया, सूडान, सेनेगल, स्पेन, स्लोवेनिया, स्विट्ज़रलैंड, सूडान हंगरी जैसे देश शामिल हैं, के सैकड़ों कवियों की कविताओं का हिंदी अनुवाद उपलब्ध हैं।

कुल मिलकर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हिंदी एक भाषा के रूप में अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच रही है, पहुँचाई जा रही है, अपनाई जा रही है, पढ़ी जा रही है, पढ़ाई जा रही है। हिंदी में बड़े स्तर पर देशी–विदेशी फिल्में देखी जा रही हैं, दिखाई जा रही हैं और साथ ही लोग दैनिक बोलचाल की भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं। हिंदी बढ़ रही थी, बढ़ रही है और बढ़ती ही रहेगी, भले ही उसके स्वरूप में उसके प्रयोक्ताओं, समय और स्थान के साथ कुछ परिवर्तन होते रहें।

जय हिंद, जय हिंदी।

पता: सहायक प्रबंधक (राजभाषा), एन.एम.डी.सी.,
प्रशासनिक कार्यालय, बेलारी, कर्नाटक
मो.नं.: 8759411563

आह्वान

बरसो हे घन!
निष्फल है यह नीरव गर्जन,
चंचल विद्युत प्रतिभा के क्षण
बरसो उर्वर जीवन के कण
हास अश्रु की झड़ से धो दो
मेरा मनो विषाद गगन!
बरसो हे घन!

हँसूँ कि रोऊं नहीं जानता,
मन कुछ माने नहीं मानता,
मैं जीवन हठ नहीं ठानता,
होती जो श्रद्धा न गहन,
बरसो हे घन!

अब भीतर संशय का तम है
बाहर मृग तृष्णा का भ्रम है
क्या यह नव जीवन उपक्रम है
होगी पुनः शिला चेतन?
बरसो हे घन!

आशा का प्लावन बन बरसो
नव सौन्दर्य रंग बन बरसो
प्राणों में प्रतीति बन हरसो
अमर चेतना बन नूतन
बरसो हे घन!

– सुमित्रानंदन पंत